उपसंहार

दलित साहित्य सदियों से उपेक्षित, पीड़ित और शोषित दलित समुदाय की खामोश आवाज़ को आकार देता है और दलित समुदाय की जड़ता को तोड़ता है। वर्तमान समय में दलित साहित्य ने साहित्यिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपना स्थान बना लिया है। 'दलित' शब्द से समाज के एक निश्चित वर्ग को पारंपरिक व्यवस्था एवं धर्मग्रंथों से प्रताड़ित, शिक्षा, संस्कृति एवं मानव अधिकारों से वंचित, सम्मान की दृष्टि से उपेक्षित, श्रम निष्ठा के आधार पर शोषित एवं उत्पीड़ित माना जाता है। इसमें समर्पण का भाव है, इसका दुखद अंत है, इसकी अपनी हताशापूर्ण निराशा है, जो विरोध और खंडन के रूप में साहित्य में प्रकट हुई। दलित साहित्य का अर्थ है वह साहित्य जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा व्यक्त की, अपने जीवन संघर्ष में जो यथार्थ अनुभव किया, दलित साहित्य उनकी अभिव्यक्ति का साहित्य है।

दलित संस्कृति का आदिम रूप 'अन्त्यज', 'अस्पृश्य', 'अछूत' और 'हरिजन' शब्दों से होता हुआ 'दलित' तक पहूँचा। सामान्यतः 'दलित' शब्द का अर्थ गरीब और उत्पीडित या दबा-कुचला होता है जो एक वर्गीय शब्द ठहरता है। लेकिन सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक सन्दर्भों में इस शब्द का एक अलग सांस्कृतिक अर्थ हो जाता है और अब इस शब्द का प्रयोग उन जातियों के लिए किया जाने लगा है जिन्हें पहले अछूत कहा जाता था। वर्तमान में 'दलित' शब्द उन्नीसवीं सदी के सुधारवादी आंदोलन (पुनर्जागरण) काल की देन है। शोषण के प्रति दलित स्त्री को अवबोध कराने का प्रयत्न साहित्यिक रचनाओं द्वारा हो रहा है।

'दलित' साहित्य की चर्चा हो और दलित महिलाओं की चर्चा न हो तो साहित्य अधूरा रह जाता है। दलितों के लिए लिखे गए साहित्य में उनकी जीवनशैली, संघर्ष और मन की पीड़ा को दर्शाने के लिए कई लेखकों ने महिलाओं को भी दलित और शोषित माना और उन्हें

'दलित साहित्य' में जगह दी। हालाँकि इस तरह के साहित्य में भी मुख्य रूप से जाति और वर्ग की दलित महिलाओं के जीवन, संघर्ष और समस्याओं का वर्णन होता है, लेकिन कई जगहों पर सामान्य या उच्च वर्ग की महिला का अवसाद, दुख या दर्द उसे दलित साहित्य में चर्चा करने की 'अनुमति' देता है, उसे स्वीकृति देता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में महिलाएँ, विशेषकर दलित महिलाएँ, जाति और पितृसत्ता के दोहरे अभिशाप का तीखा दंश झेलने को अभिशप्त हैं। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिला होने के साथ-साथ दलित होना भी महिलाओं की परेशानियों को कई गुना बढ़ा देता है। भारतीय समाज जाति और धर्म पर आधारित है। यह पितृसत्तात्मक भी है, पितृसत्ता ने अपनी सुविधा के अनुसार सारे नियम बना रखे हैं। ‘दलित’ महिलाओं को जाति और पितृसत्ता दोनों का उत्पीड़न झेलना पड़ता है। घर के बाहर जहाँ गैर-दलित उन्हें लहूलुहान करते हैं, वहीं घर के अंदर दलित पुरुषों की सामंती मानसिकता, वर्चस्व और शारीरिक हिंसा उन्हें तोड़ देती है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक रूप से मानवता का सबसे असहाय और रक्षाहीन हिस्सा 'दलित महिला' है। स्त्रियों में चेतना जागृत कर सामाजिक व्यवस्था बदलाने का कठिन प्रयास साहित्यकारों द्वारा हो रहा है। इस प्रकार स्त्री ज़िदगी के विभिन्न पहलुओं को सशक्त रूप में चित्रित करने वाला एक साहित्य विधा है कहानी। बलात्कार से पीडित स्त्री, जाती, अछूत, परंपराओं में विवश स्त्री, अंधविश्वासों के चंगुल में फँसी स्त्री, विधवा जीवन और अकेलापन बितानेवाली स्त्री, आधुनिक विचारधारा से प्रभावित स्त्री, परिवार में पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था द्वारा पीड़ित स्त्री, सामाजिक क्षेत्रों में उन्हें सामना करने वाला हर चुनौतियों, धीर्मिक संकुचित मनोभाव से उनकी गति में बाधा डालने वाली समस्याएँ आदी यथार्थ ढंग से दलित कहानियों में चित्रित किया है। दलित स्त्री जीवन को अभिव्यक्त करते हुए प्रस्तुत शोध प्रबंध में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के संघर्ष एवं प्रतिरोध को दलित स्त्री चेतना के रूप में समाहित करने का सराहनीय प्रयास किया है।

चयनित दलित कहानियों में विभिन्न महिला पात्रों के माध्यम से उनके जीवन में सत्य एवं यथार्थ के ढाँचे से महिला मुद्दों एवं चेतना के वस्तुनिष्ठ अध्ययन से प्राप्त मूल्य हैं:-

- इन कहानियों में दलित स्त्री की अस्मिता और आत्मसम्मान के संघर्ष, समाज और परिवार के उत्पीड़न को प्रस्तुत किया गया है। यदि दलित महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी होती है, तो वे जीवन में बाधाओं का सामना करने पर असफल हो जाती हैं और निराश हो जाती हैं, लेकिन आत्मविश्वासी व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों का सामना करके सफलता और सम्मान प्राप्त करता है। दलितों में भी ऐसा ही गुण विकसित हुआ है जिसके परिणामस्वरूप वे शोषकों के प्रति विद्रोही स्वर में प्रतिक्रिया करते नजर आते हैं।
- दलित महिला केन्द्रित कहानियों में पात्रगत संघर्ष आधुनिकता का लक्षण है। चयनित कहानियों में पात्रों के बीच आंतरिक संघर्ष का मुख्य कारण जाति व्यवस्था का दुष्चक्र है जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करता है।
- दलित महिलाओं को जीवन में कई विकल्पों में से एक को चुनना पड़ता है, जैसे कि शिक्षा। विकल्प की यह स्थिति महिलाओं में संघर्ष और प्रतिरोध उत्पन्न करती है।
- दलित महिलाओं को समाज में सम्मान, गरिमा और अधिकार के साथ जीने की आजादी है। प्रस्तुत कहानियों में नारी चेतना के अंतर्गत महिलाओं की पीड़ा, संवेदनशीलता, आक्रोश और संघर्ष को विस्तार से अभिव्यक्त किया गया है।
- दलित महिला पात्रों के चित्रण में उनके जीवन से जुड़े सभी पहलुओं, उनके साहस, विद्रोह, अंधविश्वास, धार्मिक भक्ति, रूढ़िवाद आदि का सटीक चित्रण किया गया है।
- आधुनिक समय की कहानियों में दलित महिला पात्रों को अन्याय, उत्पीड़न और अपमान के खिलाफ अपने क्रोध और प्रतिरोध को व्यक्त करते हुए उजागर किया गया है।

समाज में दलित स्त्री का अस्तित्व स्त्री शरीर के अस्तित्व से अधिक नहीं माना जाता है। कहीं न कहीं इसके पीछे मुख्य कारक शिक्षा, आर्थिक स्थिति या जाति है। शादी करना, बच्चे को जन्म देना और हर पुरुष की कुंठा का शिकार बनना उसकी नियति बन गई है। शिक्षा, आर्थिक और जाति जैसे कारणों से दलित महिलाएँ न तो ठीक से सोच पाती हैं और न ही कुछ कर पाती हैं। कुछ दलित महिलाएँ, जिनके परिवार संपन्न हैं, संपन्न परिवारों के दलित पुरुष उन महिलाओं पर वही अत्याचार करते हैं जो उन्हें अपने उच्च जाति के स्वामियों से विरासत में प्राप्त हैं। दोनों ही भारत की ब्राह्मणवादी पितृसत्ता के गुलाम हैं। देश में दलितों द्वारा शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने पर उनके साथ मार-पीट करना, उनको प्रताडित करना बहुत सामान्य बात है। दलित स्त्रियों का एक अलग व्यक्तित्व एवं अस्मिता है। वह किसी की गुलाम नहीं है, ऐसी रूप में दलित स्तियों के चित्रण चयनित कहानियों के द्वारा दर्शाते है। चेतित एवं विद्रोही स्त्री पात्र आधुनिक काल की दलित कहानियों की विशिष्टता है।

स्त्री अस्मिता की परिभाषा किसी निश्चित वैचारिक फ्रेमवर्क के अंतर्गत नहीं की जा सकती जो दलित, आदिवासी एवं स्त्री आदि शब्द के साथ जुड़कर स्वयं का बोध कराता है वह स्त्री अस्मिता है। ऐतिहासिक एवं सामाजिक कारणों की खोज के बावजूद समाज में नवीन विकास और परिवर्तन अनेक अंतर्विरोधों से युक्त है। जहाँ तक दलित स्त्री अस्मिता की बात है मैं यह कहना चाहूँगी कि यह वह अवस्था है जहाँ पहुँचकर दलित स्त्री खुद को स्वतंत्र, सबल और उन्नत महसूस करती है। खुद के लिए एक नयी जगह तलाशना जहाँ दलित स्त्री के आत्मसम्मान उसके आत्म विश्वास और उसके अधिकारों की पैरवी की जाए।

पिछले कुछ वर्षों में, दलित महिलाएँ अपनी अस्मिता बनाए रखने के लिए समाज, पितृसत्ता और धार्मिक सत्ता के खिलाफ लड़ने के लिए आगे आई हैं। उसकी झलक सूरजपाल चौहान की कहानी **'बदबू'** की नायिका 'संतोष' एक भंगी समुदाय की शिक्षित बहू

है। 'संतोष' में प्रतिभा है वह और पढ़ना चाहती है परंतु उसे पति एवं सास द्वारा पुश्तैनी कार्यों में झोंक दिया जाता है। 'संतोष' विरोध करती है परंतु पितृसत्ता उसके विरोध को दबा देती है। फलतः 'संतोष' जैसी प्रतिभावान दलित स्त्री की संपूर्ण प्रतिभा पाखाने की बदबू में दबकर रह जाती है। 'संतोष' अपने अति घृणित समाज को एक उम्मीद दे सकती थी किन्तु अफसोस ऐसा नहीं हो सका। क्योंकि 'संतोष' एक तो स्त्री थी, दूसरे 'दलित' और उससे भी ज्यादा भंगी। सुशीला टाकभौरे की कहानी **'साक्षात्कार'** की नायिका 'प्रतिभा' में भी प्रतिभा की कोई कमी नहीं है परंतु दलित-स्त्री-जीवन की पारिवारिक समस्याओं यथा- प्रजनन क्षमता पर पुरुषों का वर्चस्व एवं संपूर्ण पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन, उन्हें आगे नहीं बढ़ने देती है। कुसुम वियोगी की कहानी 'अन्तिम बयान' की 'अतरो' ने भी अस्मिता की सुरक्षा के लिए गाँव के प्रधान के लड़के राजेन्द्र का पुरुषत्व ही काट डाला। इन सभी स्त्री समस्याओं की जड़ में दलित पितृसत्ता का वर्चस्व हावी रहता है।

प्रतिरोध, जिसे आधुनिक साहित्य में प्रगतिशील मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है, दलित साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति है। प्रतिरोध एक सशक्त विचारधारा है, जो स्वयं आरोपित और स्वयं में निहित है। प्रतिरोध सुविधा की आवाज़ नहीं बल्कि बदलाव के लिए प्रतिबद्ध स्वीकृति है। प्रतिरोध किसी भी व्यवस्था का अतार्किक तरीके से विरोध नहीं करता। प्रतिरोध समाज में स्थापित हर अन्याय को तार्किक रूप से अप्रासंगिक साबित करता है और नए विकल्पों का आधार भी बनता है। प्रतिरोध आज साहित्य में एक व्यापक अवधारणा बन गया है। दलित कहानियों में दलित स्त्री प्रतिरोध की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक - सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का विवेचन करते हुए यह स्पष्ट हुआ है कि भारतीय संदर्भों में आज इसकी प्रासंगिकता अत्यधिक है क्योंकि व्यवस्था के रूप में स्थापित सामाजिक मान्यताएँ धर्म का आधार लेकर केवल शक्ति-तंत्र को बनाए रखने का कार्य करती है। 'जीत' कहानी की नायिका रेखा, 'अंगारा' की नायिका जमना, 'अंतिम बयान' की अतरो, 'यह अंत नहीं' कहनी

की बिरमा, 'इज्ज़त' कहानी की पात्र उषा, 'कजली' की सशक्त स्त्री पात्र कजली और 'ए.टी.एम' की नायिका सुमित्रा स्त्री शोषण के प्रति विद्रोह के स्वर को उठाते है। आज विकास की आँधी में जीवित एवं चेतन प्राणियों की शक्तियों एवं मानसिक स्थितियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। इसलिए, आज दलित महिला में जो एकमात्र क्रांतिकारी परिवर्तन आया है, वह यह है कि उसमें विरोध के खिलाफ आवाज उठाने की क्षमता विकसित हो गई है। यद्यपि अब महिलाएँ अपनी आवाज उठा रही हैं, लेकिन अब तक के सभी चेतना आंदोलन (पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा) दलित महिलाओं को सामाजिक सीढ़ी के अंतिम पायदान से उच्चतम पायदान तक ले जाने के लिए अपर्याप्त हैं। दलित महिलाओं को मानवता की मुख्यधारा में लाने के लिए साहित्य, समाज, राष्ट्र और सबसे बढ़कर पुरुषों का अभूतपूर्व सहयोग आवश्यक है। तभी सच्चा लोकतंत्र स्थापित हो सकेगा और दलित महिलाओं की धर्म और पितृसत्ता की अराजक बेड़ियों से मुक्ति का सपना साकार हो सकेगा।

'भाषा' और 'शिल्प' किसी भी साहित्य के महत्वपूर्ण अंग हैं। किसी भी रचना की उत्कृष्टता और रोचकता रचना की भाषागत विशेषताओं पर निर्भर करती है। कहानी के विकास में 'वातावरण' की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। परिवेश का यथार्थ चित्रण होना चाहिए, उदाहरण के लिए कैलाश वानखेड़े की 'महू' में महाविद्यालयीन परिवेश का चित्रण सजीव प्रतीत होता है। अत: परिवेश की सजीवता कहानी की रोचकता को बढ़ाती है। हिंदी में दलित कहानियों की भाषा सरल, सुबोध, अद्भुत और प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। भाषा की मजबूती कहानी के विकास में सहायक होती है। हिंदी में दलित कहानियों की भाषा कथात्मक संवेदना के आधार पर पूरी तरह सफल है।

शैली भी किसी रचना को एक सुसज्जित कलेवर प्रदान करती है। शैली कथा का मेरूदण्ड होती है । कहानियों और उपन्यासों में आवश्यक तत्त्व होते हुए भी एक ही विषय

पर लिखी हुई एक से अधिक रचनाएँ पाठक के मानस पटल पर भिन्न-भिन्न प्रभाव छोड़ती हैं, तो उसका मुख्य कारण उनकी शैलीगत विभिन्नताएँ हैं । दलित साहित्यकारों ने अपने कथासृजन में मुख्यतः जिन शैलियों का प्रयोग किया है उसमें आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, प्रतीकात्मक शैली का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। क्योंकि इन शैलियों के प्रयोग से कथावस्तु में कल्पनात्मक तत्त्व होते हुए भी यथार्थ की अनुभूति अभिव्यंजित होती है और दलित साहित्य का मुख्य प्रयोजन भी तो यही है ।

दलित कथा साहित्य के शिल्पविधान में दलित महिलाओं की उपस्थिति भी इसी पर आधारित है। उनके संवादों में ठेठ और स्थानीय शब्दों का प्रयोग किया गया है। आज के समय में दलित महिलाओं के प्रति पारंपरिक रूढ़ियों में थोड़ा बदलाव आया है। दरअसल, इस शोध प्रबंध का औचित्य यह है कि दलित महिलाओं को लेकर समाज में और समाज के लोगों में जो भी पूर्वाग्रह मौजूद हैं, उनसे बाहर निकलने की जरूरत है। एक इंसान द्वारा दूसरे इंसान के प्रति छुआछूत की भावना एक अमानवीय स्थिति को दर्शाती है।

आधुनिक दलित स्त्री केंन्द्रित कहानियों का मुख्य उद्देश्य दलित स्त्री जीवन की प्रताड़ना, वेदना, छटपटाहट, उनकी व्यथा एवं कथा से समाज के हर वर्ग को अवगत कराना, दलित स्त्रियों को समाज में समानता लाना और दलित उत्थान है। जिससे अन्धकार में जीने वाले इन लोगों तक भी रोशनी की एक किरण पहुँचाई जा सके। क्योंकि दलित वर्ग भी समाज का हिस्सा होता है और जब हर वर्ग का सम्पूर्ण विकास होगा, तभी समाज का भी सही मायने में विकास होगा। आज हिंदी में दलित कहानियाँ न केवल हिंदी कहानी के विकास में योगदान दे रही हैं, बल्कि अपनी अलग पहचान भी बना रही हैं और पाठकों और आलोचकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। इस तरह दलित कथा साहित्य महिलाओं की पीड़ा, उपेक्षा, निराशा, मानसिक दुर्बलता को उजागर करने के साथ-साथ उनके आक्रोश, प्रतिशोध और संघर्ष शक्ति को चेतना के माध्यम से उजागर कर रहा है। प्रस्तुत

कहानियों में निर्मित परिवेश, संदर्भ और प्रतिरोध के स्वर स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि आज जटिल समस्याएं किसी न किसी रूप में इन वर्गों को घेरे हुए हैं और उनसे लड़ना तथा उनका प्रतिरोध करना उनकी नींव के लिए आवश्यक है। आधुनिक कहानियां सामाजिक पहलू से जुड़ी इन समस्याओं को उजागर करके प्रतिरोध के मर्म को तीव्र करने में सक्षम साबित हुई हैं।

दलित महिलाएं घरेलू हिंसा और सार्वजनिक वातावरण में चुनौतियों को समाप्त करके सुरक्षा पाने के लिए लड़ रही हैं। आज महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करने, रोजगार और आर्थिक रूप से सक्षम होकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रयासरत हैं। दलित महिलाओं के सदियों से हाशिए पर रहने और व्यक्तित्वहीन होने का मुख्य कारण समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक व्यवस्था और जातिगत भेदभाव है। शिक्षित महिलाएं मानवता का अभिन्न अंग हैं लेकिन उनकी स्थिति उस हिसाब से आगे नहीं बढ़ पाई है। आज के समय में दलित महिलाओं के बारे में पारंपरिक रूढ़ियों में थोड़ा बदलाव आया है। दरअसल, इस शोध प्रबंध के पीछे तर्क यह है कि दलित महिलाओं को लेकर समाज में और समाज के लोगों में जो पूर्वाग्रह हैं, उनसे मुक्ति पाने की जरूरत है। एक इंसान द्वारा दूसरे इंसान के प्रति छुआछूत की भावना एक अमानवीय स्थिति को दर्शाती है।

इस शोध का उद्देश्य समाज और साहित्य में दलित महिलाओं के शोषण की पहचान करना है। दलित महिलाएं किसी भी समाज, वर्ग, धर्म की महिलाओं की तरह आगे बढ़ सकती हैं, लेकिन अवसरों की कमी के कारण उन्हें पीछे रहना पड़ता है। चयनित कहानियों में स्त्री पात्रों द्वारा दलितों में चेतना जाग्रत करती है। शिक्षा के महत्व के बारें में इन कहानियों में प्रतिपादित किया गया है। दलित स्त्री चेतना की पहली पीढी है -शिक्षा। दलित स्त्रियों में प्रोढ़ शिक्षा का अभाव है। इसलिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। आधुनिक दलित महिलाओं के व्यक्तित्व विकास के केंद्र में डॉ. अंबेडकर का प्रभाव स्पष्ट रूप से

दिखाई देता है। इस पीढ़ी की महिलाएं अपनी गुलामी के कारणों को समझती हैं। वह शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। 'आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री चेतना (चुनी हुई कहानियों के विशेष संदर्भ में) के अध्ययन के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि साहित्य मात्र अपनी व्यथा-कथा कहने वाला ही साहित्य नहीं हैं, बल्कि वह मनुवादी व्यवस्था व सवर्णों के व्यवहार में छिपे वर्ण संस्कारों का खुलासा भी करता है। यह सवर्णों को जाति-विषयक मानसिकता को झकझोरता है तथा संविधान प्रदत्त नए मूल्यों के साथ जीवन जीने की प्रेरणा भी देता है।

शोध की सीमा को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने शोध कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है। परंतु यह शोध कार्य अपने आप में पूर्ण ही होता है, ऐसा नहीं है। यह शोध विषय 'आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री चेतना (चुनी हुई कहानियों के विशेष संदर्भ में) का क्षेत्र इतना विस्तार है कि इस पर आगे भी शोध कार्य होने की संभावनाएँ है।

- समस्त भारतीय भाषाओं में दलित कहानियों में स्त्री का अध्ययन
- समाज में शिक्षित दलित महिलाओं और अशिक्षित दलित महिलाओं का जीवन संघर्ष-विश्लेषणात्मक - अध्ययन
- भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन (दलित कहानियों के विशेष संदर्भ में)
- दलित स्त्री चेतना समकालीन लेखिकाओं के कथा साहित्य में - विश्लेषणात्मक अध्ययन।